1

पथिक से

प्रस्तुत कविता में कवि ने पथिक को जीवन के पथ पर प्रत्येक स्थिति में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी है।

पथ भूल न जाना पथिक कहीं।
पथ में काँटे तो होंगे ही,
दूर्वादल-सरिता, सर होंगे।
सुंदर गिरि-वन-वापी होंगी,
सुंदर-सुंदर निर्झर होंगे।
सुंदरता की मृग-तृष्णा में,
पथ भूल न जाना पथिक कहीं।।

जब कठिन कर्म-पगडंडी पर,
राही का मन उन्मुख होगा।
जब सपने सब मिट जाएँगे,
कर्त्तव्य मार्ग सम्मुख होगा।
तब अपनी प्रथम विफलता में,
पथ भूल न जाना पथिक कहीं।।

अपने भी विमुख-पराए बन,
आँखों के सम्मुख आएँगे।
पग-पग पर घोर निराशा के,
काले बादल छा जाएँगे।
तब अपने एकाकीपन में,
पथ भूल न जाना पथिक कहीं।।

रणभेरी सुन, कह 'विदा, विदा'।
जब सैनिक पुलक रहे होंगे।
हाथों में कुमकुम थाल लिए,
कुछ जलकण ढुलक रहे होंगे।
कर्त्तव्य प्रेम की उलझन में
पथ भूल न जाना पथिक कहीं।।

कुछ मस्तक कम पड़ते होंगे,
जब महाकाल की माला में।
माँ माँग रही होगी आहुति,
जब स्वतंत्रता की ज्वाला में।
पल-भर भी पड़ असमंजस में,
पथ भूल न जाना पथिक कहीं।।

—शिवमंगल सिंह 'सुमन'

शिक्षा मानव जीवन संघर्षपूर्ण है।

जीवन-परिचय

शिवमंगल सिंह 'सुमन'
(1915-2002)

शिवमंगल सिंह 'सुमन' का जन्म 5 अगस्त, 1915 को ग्राम झगरपुर जिला उन्नाव में हुआ था। 'सुमन' जी बाल्यावस्था में ही ग्वालियर चले आए तथा यहीं इनकी शिक्षा संपन्न हुई। 1940 में उन्होंने काशी हिंदू विश्वविद्यालय से हिंदी में एम० ए० तथा पी० एच-डी० की उपाधि प्राप्त की। इसी विश्वविद्यालय से उन्हें गीतिकाव्य विषय पर 1950 में डी० लिट्० की उपाधि प्रदान की गई। इन्होंने अनेक शिक्षण संस्थाओं, विश्वविद्यालयों तथा हिंदी संस्थानों में उच्चतम पदों पर कार्य किया तथा अनेक देशों की यात्रा की।

1974 में इन्हें 'मिट्टी की बारात' पर साहित्य अकादमी तथा 1993 में 'भारत भारती' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 1974 में इन्हें भारत सरकार द्वारा 'पद्मश्री' से सम्मानित किया गया। 27 नवंबर, 2002 को हिंदी के इस प्रसिद्ध कवि का देहावसान हो गया।

'हिल्लोल', 'जीवन के गान', 'युग का मोल', 'प्रलय-सृजन', 'विश्व बदलता ही गया', 'विंध्य हिमालय', 'वाणी की व्यथा', 'पर आँखें भरी नहीं', 'कटे अँगूठों की बंदनवारें' आदि इनकी अनेक रचनाएँ हैं।

शब्द-पोटली

पथिक – राही। वापी – छोटा तालाब, बावड़ी। मृग-तृष्णा – भ्रम, धूप के समय मरुभूमि में वायु और प्रकाश की किरणों के परावर्तन के कारण ऐसा जान पड़ता है कि सामने जलाशय है। इसी दृष्टि-भ्रम को मृग-तृष्णा कहते हैं। एकाकीपन – अकेलापन। रणभेरी – युद्ध के समय बजाया जाने वाला नगाड़ा। पुलक – खुशी, प्रसन्नता से भरा रोमांच। कुमकुम – रोली। महाकाल – कालों का काल, महादेव। आहुति – बलिदान।

अभ्यास

संकलित मूल्यांकन

पाठ बोध

(क) सही विकल्प पर ✓ लगाइए:

1. कवि ने पथ पर चलते समय किन्हें याद रखने को कहा है?

काँटों को ☐ फूलों को ☐ पत्तों को ☐ ये सभी ☐

2. कवि ने मार्ग में किनके होने की बात कही है?

दूर्वादल ☐ सरिता ☐ वापी ☐ ये सभी ☐

3. जब अपने पराए हो जाते हैं तो कौन छा जाते हैं?

सफ़ेद बादल ☐ पीले बादल ☐ निराशा के बादल ☐ आशा के बादल ☐

4. किसकी माला में मस्तक कम पड़ते होंगे?

माली की ☐ राजा की ☐ रानी की ☐ महाकाल की ☐

(ख) निम्नलिखित पंक्तियों की ससंदर्भ व्याख्या अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखिए:

1. माँ माँग रही होगी आहुति, जब स्वतंत्रता की ज्वाला में।
2. सुंदरता की मृग-तृष्णा में, पथ भूल न जाना पथिक कहीं।

(ग) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. कवि ने मानव जीवन की पहली विफलता किसे बताई है?
2. कवि ने सुंदरता को मृग-तृष्णा क्यों कहा है?
3. कवि को किन-किन स्थितियों में पथिक के पथ भूलने की आशंका है?
4. राही एकाकीपन कब महसूस करता है?

भाषा बोध

(घ) निम्नलिखित शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए:

1. आँख – _____ _____ _____
2. आकाश – _____ _____ _____
3. बादल – _____ _____ _____
4. नदी – _____ _____ _____
5. पथिक – _____ _____ _____

रचनात्मक मूल्यांकन

मौखिक अभ्यास

- निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए तथा लिखिए:

दूर्वादल _____ निर्झर _____ पगडंडी _____ उन्मुख _____ कुमकुम _____

कविता पाठ

- पाठ में आई कविता को कंठस्थ करके कक्षा में सुनाइए।